आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2565 • उदयपुर, रविवार 02 जनवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

सेवा के संकल्पों, मानव मनोबल व सुखी संसार के सपनों के सर्जक – श्री कैलाश 'मानव'

नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक, चेयरमेन, नीति आयोग–भारत सरकार के स्वयंसेवी प्रकोष्ठ के सदस्य, आचार्य महामण्डलेश्वर पद्म श्री कैलाश जी 'मानव' का आज 74 वाँ जन्मोत्सव है। 02.01.1947 को भीण्डर (राज.) में साधनारत गृहस्थ श्री मदनलाल जी व श्रीमती सोहनीदेवी की कुक्षी से जन्म लेकर आप साधारण स्थिति से संघर्ष करके मानवता पंथ के उत्तुंग शिखर की ओर आरोहण करते जा रहे हैं। आपका बाल्यकाल भीण्डर में ही बीता।

एक साल ननिहाल गंगापुर में भी पढ़े। बाद में भीलवाड़ा आ गये। यहीं इनका संपर्क क्षेत्र बढ़ा तो जीवन के अनेक आयाम खुलते चले गए। माता–पिता के संस्कार तथा स्वयं की सद्भावना के मिश्रण से जो समझ पैदा हुई वह जीवन को आज तक निर्देशित कर रही है। भारतीय डाक व तार विभाग में सेवा करते हुए तथा इस अवधि में श्रेष्ठ पुरुषों के सम्पर्क के कारण श्री कैलाश जी 'मानव' की सेवा–प्रज्ञा का अद्भुत् विकास हुआ। संवेदना, करुणा, परोपकार, मानवता तथा सहजता तो उनको मानो विरासत में मिली ही थी पर स्वयंस्फूर्त्य सद्विचारों के कारण उनका रंग गाढ़ा होने लगा था। इनके जीवन को प्रभावित करने में आदरणीय राजमल जी भाई सा., बिसलपुर, डॉ. आर.के. अग्रवाल सा., उदयपुर का भी पूर्ण सहयोग रहा। जीवनसंगिनी श्रीमती कमलादेवी जी ने इनके व्यक्तित्व व कर्तृत्व को फलने–फूलने का वातावरण देने में कोई कोताही नहीं की।

इसी पृष्ठभूमि के आधार पर सन् 1985 में नारायण सेवा संस्थान की स्थापना द्वारा मानव सेवा का संकल्प साकार करने का शुभारंभ हुआ। पिण्डवाड़ा की दुर्घटना तथा अस्पताल में भर्ती रोगी किसना बा की घटना ने कैलाश 'मानव' को धरातलीय सेवा के लिए प्रवृत्त किया।

फिर तो 'एक मुट्ठी आटे' से यह काफिला बढ़ता रहा। इस सेवा अनुष्ठान में श्रद्धेय मफत काका, श्रद्धेय चैनराज जी लोढ़ा, श्रद्धेय पी.जी. जैन आदि के आशीर्वाद ने संकल्प रूपी पंखों में उड़ान की क्षमता भर दी। सौभाग्यवश पुत्र प्रशांत, पुत्रवधू वंदना व पुत्री कल्पना में भी ये संस्कार जागृत होकर यह सम्पूर्ण परिवार नारायण सेवा में जुट गया।

आज विश्व में जाना– माना यह संस्थान मानव सेवा के क्षेत्र में अनूठी मिसाल है। अब तक करीब 4,25,000 दिव्यांगों की सेवा करके उन्हें समर्थ बनाने का कार्य सिद्ध हो पाया है तो इसके पीछे सम्पूर्ण समाज का सम्बल ही है। श्री कैलाश 'मानव' मानवता की उत्कृष्टता के लिए हर क्षेत्र में प्रयासरत हैं।

शारीरिक, मानसिक, वैचारिक एवं सर्वांगीण विकास के लिये उनका आचार्य महामण्डलेश्वर वाला स्वरूप उभर कर आया है। भारत सरकार ने उनकी सेवाओं के लिए 'पद्मश्री' अलंकरण प्रदान किया है। आप एक श्रेष्ठ विचारक, कुशल संयोजक, अनन्य मित्र, करुणा के प्रवाहमान व्यक्तित्व हैं किन्तु आपकी सहजता और विनोदप्रियता सर्वस्पर्शी है। आप श्री को 73 वाँ वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर अनंत शुभकामनाएं।

– वंशीचन्द नाव

मानवता पंथ पर बढ़ते चरण....

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

आत्मीय स्नेह मिलन
एवं
भामाशाह सम्मान समारोह
स्थान व समय

रविवार 9 जनवरी 2022 प्रातः 11.00 बजे से

सुजाबाद भवन, नई सड़क,
ग्वालियर (म.प्र.)
7412060406

जैन मंदिर, जैनधर्मशाला, 56/62 चाह कद,
जीरो रोड, अजंता सिनेमा के पास, प्रयाग राज, यूपी
9351230393

रविवार 8 जनवरी 2022 प्रातः 5.00 बजे से

मेघराज भवन, नियर संतोषी माता मंदिर,
इशामिया बाजार, कोठी, हैदराबाद, 9573938038

इस सम्मान समारोह में
सभी दानवीर, भामाशाह सादर आमंत्रित है।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

श्री कैलाश 'मानव' के पुरुषार्थ एवं कल्याणभाव से स्थापित प्रमुख सेवा प्रकल्प

जायसवाल सेवा हॉस्पीटल, सेवाधाम, हिर. से. 4

कैलाश सारथ्यारा लोढ़ा पोलियो हॉस्पीटल, सेवाधाम, हिर. से. 4

श्रीमती चम्पी बेबी शाह पोलियो हॉस्पिटल, सेवातीर्थ बड़ी, उदयपुर

सुदामा भोजनालय, सेवातीर्थ, बड़ी, उदयपुर

श्री गंगा किशन नेत्र एवं आयुर्वेद चिकित्सालय, सेवातीर्थ, बड़ी, उदयपुर

श्री प्रवीण आर. शाह अतिथि भवन, सेवातीर्थ, बड़ी, उदयपुर

इंदुमती ... शाह (एलकाठ) पोलियो हॉस्पिटल,सेवातीर्थ बड़ी, उदयपुर

श्री ... सेवा सदन, सेवातीर्थ, बड़ी, उदयपुर

मीरा की मुरली, सेवातीर्थ, बड़ी, उदयपुर

जायसवाल सेवा हॉस्पिटल, सेवातीर्थ बड़ी, उदयपुर

श्री सत्येन्द्र ... बाल हॉस्पीटल, सेवातीर्थ, बड़ी, उदयपुर

मधु श्री सुधीर ... सेवा भवन सेवातीर्थ बड़ी, उदयपुर

खुद को टटोलें

दो आदमी यात्रा पर निकले। दोनों की मुलाकात हुई। दोनों यात्रा में साथ हो गए। सात दिन बाद दोनों के पृथक होने का समय आया तो एक ने कहा, भाईसाहब! एक सप्ताह तक हम दोनों साथ रहे। क्या आपने मुझे पहचाना ? दूसरे ने कहा, नहीं, मैंने तो नहीं पहचाना। वह बोला, माफ करें मैं एक नामी ठग हूं। लेकिन आप तो महाठग हैं। आप मेरे भी उस्ताद निकले। कैसे? कुछ पाने की आशा में मैंने निरंतर सात दिन तक आपकी तलाशी ली, मुझे कुछ भी नहीं मिला। इतनी बड़ी यात्रा पर निकले हैं तो क्या आपके पास कुछ भी नहीं है ?

बिल्कुल खाली हाथ हैं? नहीं, मेरे पास एक बहुमूल्य हीरा है और थोड़ी–सी रजत मुद्राएं। तो फिर इतने प्रयत्न के बावजूद वह मुझे मिली क्यों नहीं? बहुत सीधा और सरल उपाय मैंने काम में लिया। मैं जब भी बाहर जाता, वह हीरा और मुद्राएं तुम्हारी पोटली में रख देता था। तुम सात दिन तक मेरी झोली टटोलते रहे। अपनी पोटली संभालने की जरूरत ही नहीं समझी। तुम्हें मिलता कहां से? कहने का अर्थ यह कि हम अपनी गठरी संभालने की जरूरत नहीं समझते। हमारी निगाह तो दूसरों के झोले पर रहती है। यही हमारी सबसे बड़ी समस्या है। अपनी गठरी टटोलें, अपने आप पर दृष्टिपात करें तो अपनी कमी समझ में आ जाएगी। यह समस्या सुलझा सकें तो जीवन में कहीं कोई रूकावट और उलझन नहीं आएगी।

मानव–मानस–मंथन के वरेण्य सूत्र

- सरल जीवन हो, सेवामय जीवन हो।
- जो अपनी मदद करता है, भगवान उसकी मदद करता है।
- धीरज रखो, धैर्य रखो, मित्रता अच्छी रखो। नारी का सम्मान रखो तो बाधा दूर हो जाती है।
- नारायण सेवा का अर्थ है साहस।
- अध्यात्म भगोड़ों का नहीं, शूरवीरों का ... देता है।
- जीवन रूपी औषधि एक्सपायर हो जायेगी, हमें अ... जीवन को दीन–दुखियों की सेवा में लगा देना चाहिए
- भारतीय संस्कृति में समस्त पृथ्वी को अपने परिवार के रू... माना गया है।
- हम विनम्र हैं तो हमारे साथ दूसरों का व्यवहार भी नम्र होगा...
- लाठी और पत्थर की चोट से भी ज्यादा घातक होती है 'अपश... अथवा अहंकार युक्त वाणी की चोट।
- सज्जनता की परीक्षा पहले वाणी फिर व्यवहार से होती है।
- मीठी वाणी और सद्व्यवहार व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला है।
- हमें कर्महीन नहीं, कर्मवान बनना है।
- मानव में करुणा का भाव स्थायी है।
- धर्म की धारणा के अनेक बीज हैं उनमें दया भी प्रमुख है।
- दयाभाव उपजते ही करुणा की धारा उत्पन्न होकर बहने ल... है।
- करुणाधारा से ईश्वरीय कार्य सधने लगते हैं।
- दौलत का सर्वोत्तम उपयोग–असहाय बीमारों दुःखियों एवं निराश्रितों के सेवा में लगाना।
- जब दैवीयगुण अन्तर्मन में अंगड़ाई लेते हैं तो अन्तःकरण स्वतः

सम्पादकीय

व्यक्ति जीवन में जो परिकल्पना करता है उसे अपनी आँखों से साकार होते देखता है तो उसे कितना आत्मतोष होता है, यह कोई स्वयं भोक्ता ही जान सकता है। इस उपलब्धि के बाद ही व्यक्ति की परख होती है, क्योंकि यही वह बिन्दु है जहाँ से दो राहें निकलती हैं। पहली राह उपलब्धि के दंभ से परिपूर्ण होकर व्यक्ति को अहं से भर देती है तो दूसरी राह उसे और भी विनम्र बना देती है। अहं का प्रादुर्भाव जिस व्यक्ति में हो गया उसकी तो चर्चा ही व्यर्थ है। जो उपलब्धियों के आकाश में रहकर भी जमीन पर पैर टिकाये हुए होता है, वस्तुतः वही समाज में उदाहरण बनता है। सफलता के शीर्ष पर जाकर भी विनय को साधे रखना असंभव भले ही नहीं है पर दुष्कर तो है ही। यह एक ऐसा अवसर होता है जहाँ पर प्रशंसा के पहाड़ खड़े किये जाते हैं, जहाँ करतब बखानने की कलकल करती नदियां बहाई जाती हैं, जहाँ सिर उठाये पेड़ों से पैरोडी बनाई जाती है। यह स्वाभाविक भी है। किन्तु इस प्रवाह में, इस झोंके में, इस लय में जो न बहे वही तो धनी है मानव मूल्यों का। वही तो उदाहरण होता है शास्त्रीय परम्पराओं का, वही तो फलदार वृक्षों की, गहरे जल प्रवाह की और सबकुछ लुटाती प्रकृति का प्रतिनिधि कहलाता है। श्री कैलाश 'मानव' ऐसे ही एक व्यक्ति हैं। आज भी ठेठ ग्रामीण अंदाज में वार्तालाप, आज भी खनकदार हँसी, आज भी नैसर्गिक व्यवहार आपकी दैनंदिन चर्या में दिखाई देता है। आपके जन्मोत्सव पर यही शुभकामनाएं कि आपके ये विरासती और अर्जित गुण सदैव बने रहें, निखरते रहें, बँटते रहें।

- वरदीचन्द राव

अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार समारोह
दानदाताओं ने बांटे 1000 कंबल

दिव्यांगों की सेवा की अपनी प्रेरक यात्रा में नारायण सेवा संस्थान ने 29 नवम्बर को उदयपुर में 'अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार समारोह का आयोजन किया। संस्थापक चेयरमैन पूज्य श्रीकैलाश जी मानव और अध्यक्ष सेवक प्रशांत जी भैया ने 100 से अधिक दानदाताओं को प्लैटिनम, डायमंड, गोल्ड, रजत, और कांस्य श्रेणियों में पुरस्कार प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया। सेवक प्रशांत जी भैया ने बताया कि संस्थान ने पिछले 36 वर्षों में 3.5 लाख से ज्यादा दिव्यांगों के निःशुल्क ऑपरेशन किए और उन्हें चिकित्सा सेवाओं, दवाइयों और प्रौद्योगिकी का लाभ देकर पूर्ण सामाजिक आर्थिक सहायता प्रदान की है।

कार्यक्रम के दौरान फिजियोथेरेपी, कैलीपर्स, मॉड्यूलर इक्विपमेंट्स, ट्राइसाइकल, व्हीलचेयर, लिम्स और कई अन्य आधुनिक प्रकार के उपकरण जरूरतमंदों को निःशुल्क प्रदान किए गए, दानदाताओं के माध्यम से जरूरतमंदों को एक हजार कम्बलों का भी वितरण हुआ। कार्यक्रम सह संस्थापिका श्रीमती कमला जी, निदेशिका वंदना जी, पलक जी व ट्रस्टी–निदेशक देवेन्द्र जी चौबीसा ने भी विचार व्यक्त किए।

पारिवारिक एकता का राज

जापान के राजा यमातो के पूर्व मंत्री थाओ चोसान का परिवार आपसी एकता, स्नेह और सौहार्द के लिए मशहूर था। उसके परिवार में एक हजार सदस्य थे। सभी सदस्य प्रेम से साथ में रहते। इस परिवार की एकता और स्नेह की कहानी यामातो ने सुनी तो एक दिन वे अपने मंत्री के घर पहुंचे।

उन्होंने मंत्री से पूछा– 'मैंने आपके परिवार के अनूठे प्रेम के बारे में सुना है। इतने अधिक व्यक्तियों वाले आपके परिवार में यह आपसी जुड़ाव केसे बना हुआ है ?' थाओं चोसान वृद्धावस्था के कारण अधिक नहीं बोल सकता था। उसने अपने पोते को कलम, दवात और कागज लाने के लिए कहा। उसने अपने कांपते हाथों से कोई सौ शब्द लिखकर कागज राजा की ओर बढ़ा दिया।

राजा ने उत्सुकतावश कागज को देखा, तो वह चकित रह गया। कागज में एक ही शब्द सौ बार लिखा गया था। यह शब्द था–'सहनशीलता।' राजा को चकित देखकर थाओ चोसान ने कांपती हुई आवाज में कहा–'महाराज, मेरे परिवार की एकता का रहस्य इसी एक शब्द में निहित है। यह महामंत्र ही हमारे बीच एकता का धागा बन परिवार को अब तक पिरोए हुए है।